International Journal of Research
Available at https://edupediapublications.org/journals
p-ISSN: 2348-6848
e-ISSN: 2348-795X
Vol. 04 Issue 12
Septemebr 2017

हिन्दी उपन्यासों में नारी चेतना आदि कल से वर्तमान तक

श्रीमती मनीषा
हिन्दी विभाग
सहायक प्रवक्ता
छोटू राम आर्य महाविद्यालय,
सोनीपत–131001

सारांश

आज नारी विमर्श के स्तर पर नारी चेतना से संपन्न हिंदी उपन्यास लिखे जा रहे हैं, जिसमें नारी की आत्मा, स्व और अहं ध्वनित है। वास्तव में चेतना का अर्थ विचारों, अनुभूतियों, संकल्पों की आनुषांगिक दशा, स्थिति अथवा क्षमता से है। उसका संबंध नारी की स्वयं की पहचान या किसी भी स्तर पर विषयगत अनुभवों के संगठित स्वरूप से होता है। नारी विमर्श और चेतना के विकास का ही परिणाम है कि नारी आज सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, व्यावसायिक और वैज्ञानिक क्षेत्र में पुरुष के समान ही नहीं बल्कि पुरुष से आगे बढकर अपनी निःशंक सेवाएं दे रही हैं। नारी चेतना का ही चरम है, जहाँ वह यह कहती है– ??मैं उन औरतों में नहीं हूँ, जो अपने व्यक्तित्व का बलिदान करती है, जिनकी कोई मर्यादा और शील नहीं होता है। मैं न उनमें हूँ, जिनके चरित्र पर पुरुष की हवा लगते ही खराब हो जाते हैं और न पति की गुलामी को सच्चरित्रा का प्रमाण मानती हैं। मुझमें आत्मनिर्भरता भी है और आत्मविश्वास भी। मुझे स्वतंत्र निर्णय लेने की क्षमता है तो पति और परिवार के साथ सामंजस्य बनाने की शक्ति भी। अतः जीवन के यथार्थ को स्वीकार करने में कोई झिझक भी नहीं है।

नारियों पर बढ़ते अत्याचारों एवं अमानवीय दुर्घटनाओं के खिलाफ आज पूरे देश में नारी चेतना, विमिन्स लिब और नारी आरक्षण की बात की जा रही है। 'नारी तुम उठो, जागो और लड़ो' का नारा बुलंद किया जा रहा है। नारी चेतना की आज जरूरत क्यों महसूस की जा रही है। आज की नारी की जागरुक सशक्त एवं सचेत रहना चाहिये। इसका मतलब तो यह हुआ कि वर्षों से नारी पिछड़ी हुई एवं सजग नहीं थी और यदि ऐसा है तो उसकी चेतना की सीमा कहां तक होगी? नारी चेतना का मापदंड क्या होगा? क्या उसे मर्यादा लांघ कर स्वच्छंद पाश्चात्य शैली

p-ISSN: 2348-6848
e-ISSN: 2348-795X
Vol. 04 Issue 12
Septemebr 2017

के अनुसार रहना चाहिये? क्या उसे उसके अधिकारों से अवगत कराने के मायने ही चेतना की परिभाषा है और यदि ऐसा है तो अपने दायित्व तथ नारी सुलभ गुणों को त्याग कर सिर्फ अधिकारों तक ही सोच रखना चाहिये?– ऐसे अनेक प्रश्न

कहते हैं, किसी देश की स्थिति व प्रगति का अनुमान लगाना हो तो उस देश में स्त्रियों की स्थिति का अध्ययन करना चाहिए। इसका अर्थ हुआ कि स्त्री अस्मिता और देश की अस्मिता का जुड़ाव बिन्दु एक ही है। स्त्री–पुरुष परस्पर पूरक होते हुए भी दो स्वतंत्र इकाइयां हैं। दोनों स्वतंत्र अस्तित्व हैं, दोनों की स्वतंत्र अस्मिता स्वस्थ संतुलित समाज का आधार है। यह संतुलन जब भी विकृत हुआ है सामाजिक ढांचा बिखरा है, विघटित हुआ है। देश की स्वाधीनता से पूर्व जन जागरण काल के महापुरुष, विशेषकर स्वामी विवेकानंद इस तथ्य को भलीभांति समझ गये थे कि निरक्षर, पिछड़ी, अधिकारविहीन, घर की चारदीवारी में कैद माताओं की गोद में पलकर पुरुष वर्ग निरन्तर बलहीन एवं कमजोर हो रहा है। उन्होंने तत्काल स्त्री जागरण का शंखनाद किया।

स्वामी विवेकानन्द में हमारे अतीत की गौरव–गरिमा को व्यक्त करने की अद्भुत क्षमता थी। वे कहते हैं, श्मेरा तो दृढ़ विश्वास है कि जिस जाति ने सीता को उत्पन्न किया, चाहे वह उसकी कल्पना ही क्यों न हो, उस जाति में स्त्री जाति के लिए इतना अधिक सम्मान और श्रद्धा है जिसकी तुलना संसार में हो ही नहीं सकती।...जहां तक गृहस्थ धर्म का संबंध है, मैं बिना संकोच के कह सकता हूं कि भारतीय प्रणाली में अन्य देशों की अपेक्षा अनेक सद्गुण विद्यमान हैं।श स्वामी जी गृहस्थों को हीन नहीं मानते थे। उनका विचार था कि गृहस्थ भी ऊंचा और संन्यासी भी नीचा हो सकता है– संन्यासी और गृहस्थ में कोई भेद नहीं करता। संन्यासी हो या गृहस्थ– जिसमें भी मुझे महत्ता, हृदय की विशालता और चरित्र की पवित्रता के दर्शन होते हैं, मेरा मस्तक उसी के सामने झुक जाता है।श

स्वामी विवेकानन्द की उद्घोषणा है श्भारत! तुम मत भूलना कि तुम्हारी स्त्रियों का आदर्श सीता, सावित्री, दमयंती हैं, मत भूलना कि तुम्हारे उपास्य हैं सर्वत्यागी उमानाथ शंकर। मत भूलना कि तुम्हारा विवाह, तुम्हारा धन और तुम्हारा जीवन इंद्रिय सुख के लिए अपने व्यक्तिगत सुख के लिए नहीं है। मत भूलना कि तुम जन्म से ही माता के लिए बलि स्वरूप रखे गये हो। मत भूलना कि तुम्हारा समाज उस विराट महामाया की छाया मात्र है।श

प्रत्येक भारतीय स्त्री की यह आकांक्षा होती है कि वह अपने जीवन को भगवती सीता के समान पवित्र और भक्तिपूर्ण बनाये। सीताजी और भगवान श्रीरामचन्द्र के चरित्रों के अध्ययन से भारतीय आदर्श का पूर्ण ज्ञान हो सकता है। पाश्चात्य और भारतीय जीवन आदर्शों में भारी अंतर है।

p-ISSN: 2348-6848
e-ISSN: 2348-795X
Vol. 04 Issue 12
Septemebr 2017

सीता जी का चरित्र हमारी जाति के लिए सहनशीलता का आदर्श है। पाश्चात्य संस्कृति कहती है कि तुम यंत्रवत् कार्य में लगे रहो और अपनी शक्ति का परिचय कुछ भौतिक ऐश्वर्य प्राप्त करके दिखाओ। भारतीय आदर्श उसके विपरीत कहता है कि तुम्हारी महानता दुरूखों को सहन करने की शक्ति में है। पाश्चात्य आदर्श अधिक से अधिक धन सम्पत्ति के संग्रह में गर्व करता है जबकि भारतीय आदर्श हमें अपनी आवश्यकताओं को न्यून से न्यून कर जीवन को सरलतापूर्वक व्यतीत करना सिखाता है। इस प्रकार पूर्व और पश्चिम के आदर्शों में दो ध्रुवों का अंतर है।

माता सीता भारतीय आदर्श की प्रतीक हैं। भगवती सीताजी को पग–पग पर यातनाएं और कष्ट प्राप्त होते हैं, परंतु उनके मुख से श्री रामचन्द्र जी के प्रति एक भी कठोर शब्द नहीं निकलता। उन्हें अन्यायपूर्वक भयंकर वन में निर्वासित कर दिया जाता है, परंतु उसके कारण उनके हृदय में कटुता का लेश मात्र भी नहीं होता। यही सच्चा भारतीय आदर्श है। सीता जी भारतीय नारीत्व की उज्ज्वल प्रतीक हैं। आज सहस्रों वर्षों के उपरांत भी भगवती सीता कश्मीर से कन्याकुमारी तक और कच्छ से कामरूप तक, क्या पुरुष क्या स्त्री और क्या बालक–बालिका–सभी की आदर्श–आराध्य देवी बनी हुई हैं। पवित्रता से भी अधिक पवित्र, धैर्य और सहनशीलता की साक्षात् प्रतिमा माता सीता सदा–सर्वदा उस महान पद पर आसीन रहेंगी।

वैश्विक दृष्टि और भारतीय स्त्री

स्वामी विवेकानंद में नारियों के प्रति असीम उदारता का भाव था। वे कहते थे कि श्ईसा अपूर्ण थे, क्योंकि जिन बातों में उनका विश्वास था, उन्हें वे अपने जीवन में नहीं उतार सके। उनकी अपूर्णता का सबसे बड़ा प्रमाण यह है कि उन्होंने नारियों को नरों के समकक्ष नहीं माना। असल में, उन्हें यहूदी संस्कार जकड़े हुए था, इसलिए वे किसी भी नारी को अपनी शिष्या नहीं बना सके। इस मामले में बुद्ध उनसे श्रेष्ठ थे, क्योंकि उन्होंने नारियों को भी भिक्षुणी होने का अधिकार दिया था।श

स्वामी जी से किसी पत्रकार ने पूछा श्स्वामी जी, तो क्या भारतीय स्त्री जीवन के संबंध में हम इतने संतुष्ट हैं कि हमारे समक्ष उसकी कोई भी समस्या नहीं है?श

‘कल तक वे घर की दहलीज के भीतर थीं सहमी, सकुचाई, ठिठकी–ठिठकी, आज वे दहलीज के पार हैं अपनी जमीन तलाशती, कल तक उनके सपने आँखों की पलकों पर ही चिपके रहते थे, आज वे सपने साकार बन रहे हैं, धीरे–धीरे।’

p-ISSN: 2348-6848
e-ISSN: 2348-795X
Vol. 04 Issue 12
Septemebr 2017

नारी शक्ति का यह समवेत स्वर, आज युगपरिवर्तन के इन महान क्षणों में अपनी यथार्थता की गूँजी के साथ सर्वत्र प्रतिध्वनित हो रहा है। विश्व के हर कोने में ऐसी हवा चल पड़ी है महिलाओं के विकास के अनुरूप वातावरण बनता जा रहा है। नारी भी अपने घर की चहारदीवारी में सिमटे दोयम दर्जे से उबरकर अंतर्निहित क्षमता, सूझ–बूझ एवं साहस का परिचय देती हुई और दृढ़ एवं आत्मविश्वासपूर्ण कदमों के साथ आगे बढ़ रही है। पुरुष प्रधान समाज में वह अपने स्वतंत्र अस्तित्व का अहसास दिला रही है।

:स में जनसंख्या की **53** प्रतिशत महिलाएं हैं, जिनमें **47** प्रतिशत महिलाएं रोजगार में लगी हैं। नौकरी में लगी उच्च शिक्षा प्राप्त महिलाओं की संख्या **50-5** प्रतिशत है और **56-2** प्रतिशत विशिष्ट उच्चतर शिक्षा प्राप्त है। राजनीति में महिलाओं की भागीदारी बढ़ाने के लिए कई प्रयास चल रहे हैं। इसी उद्देश्य से अक्टूबर **1993** में 'वीमेन ऑफ एशिया' नामक राजनैतिक आँदोलन की नींव रखी गई थी। **1993** के संसदीय चुनाव में इस आँदोलन की **21** सदस्या विजयी होकर आई थी। इसी क्रम में तत्कालीन राष्ट्रपति बोरसि येल्तिसन ने महिलाओं के हित में एक अध्यादेश जारी किया था, जिसमें इस बात पर जोर दिया गया था कि स्त्रियाँ समाज में जो भूमिका अदा कर रही हैं, उसी अनुपात में उन्हें राज्य प्रणाली के उच्च व मुख्य पदों पर भी प्रतिनिधित्व दिया जाए। प्रथम बार अध्यादेश के माध्यम से महिलाओं के लिए न्यूनतम कोटा रखने की बात की गई थी।

ईरान के उदारवादी राष्ट्रपति मोहम्मद खातमी ने एक महिला सम्मेलन में स्त्रियों को पुरुषों के बराबर अधिकार देने की वकालत की है और कहा है कि मजहब के आधार पर महिलाओं को उनके वाजिब अवसरों से वंचित नहीं करना चाहिए। अपने वादे को निभाते हुए उन्होंने महिलाओं को महत्वपूर्ण पदों पर नियुक्त भी किया। जिनमें मैसीमेह उल्तेकार तो उपराष्ट्रपति पद पर हैं। इस समय ईरानी संसद में **13** महिला सदस्य और एक महिला उपाध्यक्ष हैं। महिलाओं को समान अधिकार देने संबंधी प्रयास के ही परिणामस्वरूप वर्ष **97** के अंत में ईरान ने पहली बार महिला न्यायाधीशों की नियुक्ति की। ईरान में **1978** में हुई इस्लामी क्रॉंति के बाद से महिलाओं की पारिवारिक भूमिका पर ही बल दिया जाता था और अब तक उनके न्यायाधीश बनाए जाने पर रोक थी, पर अब स्थिति बदल रही है।

उगते सूर्य के देश जापान में भी नारियों की स्थिति में बहुत परिवर्तन आ गया है। द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद छह वर्ष के अमेरिकी कब्जे व पुनर्निर्माण के गत चार दशकों में आर्थिक सुधार व सबके लिए अनिवार्य शिक्षा को इस बदलाव का कारण माना जाता है। गत बीस वर्षों में

जापान के श्रम बाजार में महिलाओं ने पुरुषों की अपेक्षा तेजी से प्रवेश किया है। **1996** में संपूर्ण श्रम शक्ति की **50** प्रतिशत पूर्ति महिलाएं कर रही थीं। वर्ष **1976** से **1996** के बीच प्रबंधकीय पदों पर महिलाओं की उपस्थिति में **60** प्रतिशत वृद्धि हुई। अभी तक अधिकाँश महिलाएं बैंक व डिपार्टमेंटल स्टोर तक सीमित थीं, जबकि आज भव्य व्यापारिक मंत्रणा कक्ष भी उनके लिए अछूते नहीं रह गए हैं। वर्षों से जापानी कंपनियों में प्रबंधकीय श्रेणी केवल पुरुषों के लिए आरक्षित मानी जाती थी व महिलाएं लिपिकीय कार्य तथा चाय परोसने तक सीमित थीं। अब पहली बार महिलाएं प्रबंधन की ओर अग्रसर हुई हैं और उनकी संख्या बढ़ती जा रही है।

सिडनी में हुए एक अंतर्राष्ट्रीय सर्वेक्षण के अनुसार पुरुषों की तुलना में महिलाएं अच्छी 'बॉस' सिद्ध हो सकती हैं, क्योंकि वे अपने काम के प्रति अतिरिक्त प्रयास के लिए तैयार रहती है और उनका सहयोगी व्यवहार आधुनिक कार्यस्थली के लिए उपयुक्त रहता है। महिला प्रबंधक अपने कर्मचारियों को ऊंचे–से–ऊंचा लक्ष्य हासिल करने के लिए प्रेरित करती है और कर्मचारियों के अच्छे कार्यों के लिए उनको प्रतिफल भी प्रदान करती है। महिलाएं अपने स्टाफ को कार्यों के संबंध में नए विचार और तरीके अपनाने के लिए प्रेरित करती हैं। सर्वेक्षण में आस्ट्रेलिया, न्यूजीलैंड, अमेरिका और कनाडा के उत्पादन और सेवा संस्थानों के **1332** से अधिक कर्मचारियों के विचार लिए गए थे। इस सर्वेक्षण से यह भ्रम तो टूटा ही है कि नेतृत्व की भूमिका के लिए महिलाएं उपयुक्त नहीं होती, सर्वेक्षण में यह भी कहा गया है कि पुरुष नेतृत्व क्षमता विकसित करने के लिए महिलाओं से सीख ले सकते हैं।

अपने देश की पंचायतों में महिलाओं की भागीदारी एक क्राँतिकारी कदम है। **73**वें संविधान संशोधन बिल के परिणामस्वरूप अधिक–से–अधिक महिलाओं को लोकतंत्र के आधारभूत स्तर पर राजनैतिक प्रक्रिया में भाग लेने के अवसर मिल रहे हैं। पंचायती राज के तीनों स्तरों–गाँव, ब्लॉक एवं जिला स्तर पर महिलाओं के लिए एक तिहाई स्थान आरक्षित किए गए हैं। अपनी भूमिका सक्षमता से निभाते हुए उन्होंने सिद्ध कर दिया है कि महिलाएं किसी तरह कम नहीं है। अनुभव से ज्ञात हो रहा है कि वे बहुत अच्छा काम कर रही हैं। कहीं–कहीं तो पथभ्रष्ट पुरुष को सीधे रास्ते पर लाकर सभ्य समाज की परिकल्पना साकार कर रही हैं।

पंचायती राज व्यवस्था के अंतर्गत मिले अधिकारों एवं कर्त्तव्यों का सदुपयोग करते हुए बस्तर जिले की ग्राम पंचायत कलगाँव की महिलाओं ने अपने पिछड़े गाँव को एक आदर्श गाँव के रूप में बदलकर एक मिसाल कायम कर दी है। **800** महिलाओं से बने महिला मंडल ने जब रचनात्मक कार्यों को हाथ में लिया तो सर्वप्रथम शराब के विरुद्ध आँदोलन छेड़ा। गाँव में शराब में डूबे पुरुषों द्वारा लड़ाई–झगड़ा एवं नारी शोषण आम बात हो गई थी। घर–परिवार की आर्थिक

International Journal of Research
Available at https://edupediapublications.org/journals
p-ISSN: 2348-6848
e-ISSN: 2348-795X
Vol. 04 Issue 12
Septemebr 2017

स्थिति की बिगड़ती जा रही थी। महिलाओं के शराब विरोधी आँदोलन से शराबियों की शामत आ गई। उन्हें दंडस्वरूप **157** रुपये जुर्माना देना पड़ा था। प्रति रविवार मद्यपान, निरक्षरता एवं अंधविश्वास के विरुद्ध अभियान रूप में रैली होती थी और दिनभर गलियों की सफाई। साथ ही 'स्कूल चलो' अभियान के अंतर्गत बच्चों को स्कूल भेजा जाने लगा।

पंचायती राज से मिले एक तिहाई आरक्षण का उत्तराखंड की पहाड़ी महिलाएं भी भरपूर उपयोग कर रही हैं। इसके परिणामस्वरूप कई महिलाएं ग्राम प्रधान, ब्लॉक प्रमुख और जिला पंचायत की सदस्य चुनी गई हैं। इनमें से कई स्वतंत्र रूप से अपने प्रभाव का उपयोग कर रही हैं। विशेषकर चेतना आँदोलन से जुड़ी महिलाएं पंचायती संस्थाओं के ऊपर अपनी छाप छोड़ती जा रही हैं। ये सभी पुरुष प्रधान समाज में स्त्रियों की पहचान बनाने व उनकी सामाजिक सुरक्षा दृढ़ करने में संघर्षरत हैं। भ्रष्टाचार एवं शराबखोरी के विरुद्ध ये मुहिम छेड़े हुए हैं।

हरियाणा के पंचायती राज में महिलाओं की भूमिका पर सेंटर फॉर डेवलपमेंट एंड एक्शन ने दो वर्ष के अंतराल में एक अध्ययन किया है। इनके अनुसार एक मौन क्राँति का शुभारंभ हो चुका है। अधिकाँश चुनी गई महिलाएं दो वर्ष पूर्व अनपढ़ थीं, लेकिन दो वर्ष में सरकारी कागज–पत्र व दस्तावेजों को पढ़ने में अक्षम व शिक्षित पति–पुत्रों पर निर्भरता के कटु अनुभवों ने उन्हें शिक्षित होने की प्रबल प्रेरणा दी है और ये महिलाएं अपनी पुत्रियों को शिक्षित करने के लिए दृढ़ संकल्पित हैं। आरंभ में उन्हें पंचायत तंत्र का कोई ज्ञान नहीं था। आज वे इसमें सक्रियता से भाग ले रही हैं व अपनी शक्तियों का प्रयोग कर रही हैं।

दिल्ली स्थित लेडी इरविन कॉलेज के कम्यूनिटी रिसोर्स मैनेजमेंट तथा एक्सटेंशन विभाग की विदुषी शोधार्थियों ने सत्ता के विकेंद्रीकरण एवं स्थानीय की विदुषी शोधार्थियों ने सत्ता के विकेंद्रीकरण एवं स्थानीय प्रशासन में महिलाओं की भागीदारी से उनकी स्थिति में होने वाले परिवर्तन का पता लगाने के लिए एक सर्वेक्षण किया। अखिल भारतीय महिला संघ की सहायता से होने वाला यह सर्वेक्षण पाँच राज्यों में किया गया। **86** महिला कार्यकर्त्ताओं की संगोष्ठी में सर्वेक्षण की रिपोर्ट प्रस्तुत की गई। विभिन्न राज्यों में महिला समाज के अंदर होने वाली उथल–पुथल के रोचक प्रसंगों को उजागर करते हुए संगोष्ठी इस निष्कर्ष पर पहुँची कि ग्रामीण महिलाओं में राजनीति के प्रति जाग्रति बढ़ रही है। सत्ता में उनकी महत्वपूर्ण भूमिका एवं अनुकरणीय सफलता की कहानियाँ तो इन्हें प्रोत्साहित करती ही हैं, महिला समाज में हो रहे सामाजिक एवं राजनैतिक परिवर्तन की ओर भी संकेत करती हैं।

विभिन्न क्षेत्रों के पंचायती राज में सक्रिय महिलाओं के विचार इस तरह से थे। लखनऊ में एक ब्लॉक पंचायत की सदस्य का कहना था, 'हम आरक्षण को बैसाखी की तरह नहीं देखते, इसे

p-ISSN: 2348-6848
e-ISSN: 2348-795X
Vol. 04 Issue 12
Septemebr 2017

प्रमुख धारा से जुड़ने तथा कुछ सार्थक कार्य करने की शुरुआत मान रहें हैं।' फरीदाबाद जिला पंचायत की एक सदस्या का कहना था, 'वे महिलाएं जो पहले घर से बाहर निकलने में झिझकती थीं, आज प्रशासन में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं। यही एक क्रॉंतिकारी कदम है।' हिमाचल प्रदेश के सोलन जिले की एक ग्रामप्रधान का कथन था, 'पंचायत चलाने में क्या कठिनाई है? एक महिला यदि एक परिवार को चला सकती है, तो वह पंचायत भी चला सकती है। संभवतः पुरुषों की अपेक्षा अधिक दक्षता से।'

महिलाओं में शिक्षा के प्रसार के उद्देश्य से नेशनल पॉलिसी ऑफ एजुकेशन **96** का सूत्रपात हुआ था। इसके द्वारा शिक्षित महिलाओं की संख्या में सुधार हुआ है। प्राथमिक स्कूलों में लड़कियों के प्रवेश की वृद्धि दर **1981** की **66-2** प्रतिशत से **1991** तक **88-6** प्रतिशत तक रही। साक्षरता कार्यक्रमों में बढ़–चढ़कर हिस्सा लेने से भी महिलाओं में एक जाग्रति पैदा हुई है। पश्चिमी बंगाल व आंध्रप्रदेश में शराबबंदी इसी जागरुकता का परिणाम रही। तमिलनाडु में पुडुडुकोट्टाई में साक्षरता व कराटे के अभ्यास ने महिलाओं को साहसी बना दिया है। इस क्रम में दिल्ली में साक्षरता अभियान के अंतर्गत **30** हजार कक्षाएं चलीं। प्रत्येक कक्षा में **10** छात्र थे, इनमें महिलाओं की संख्या **90** प्रतिशत थी। यहाँ कई क्षेत्रों में **50** प्रतिशत महिलाएं साक्षर हो चुकी हैं।

उपयुक्त सहायता, समर्थन और प्रशिक्षण मिलने से अशिक्षित, अप्रशिक्षित महिलाएं भी परिवार से लेकर राष्ट्र के आर्थिक विकास में अपना योगदान किस कुशलता से दे सकती हैं और आर्थिक परावलंबन को भी पछाड़ सकती है– राजस्थान सहकारिता आँदोलन से जुड़ी सैकड़ों महिलाएं इसका उदाहरण है। विविध सहकारी संगठनों के द्वारा अभिसिंचित आदिवासी महिलाओं का रेशम उत्पादन व्यवसाय आज लंबे संघर्ष एवं कठोर श्रम के परिणामस्वरूप फल–फूल रहा है। जिससे सैकड़ों आदिवासी महिलाएं न केवल आर्थिक रूप से बल्कि सामाजिक शक्ति के रूप में उभर रही हैं। यही नहीं अपने बच्चों के स्वास्थ्य, शिक्षा, स्वच्छता आदि पर भी उचित ध्यान दे रही हैं।

इस तरह नारी चेतना अब जाग्रत हो उठी है। जागी ही नहीं, बल्कि उठकर आगे भी बढ़ चली है। उसके बढ़ते चरणों को अब कोई रोक नहीं सकता और शीघ्र ही वह अपने गौरवमयी पद पर प्रतिष्ठित होकर रहेगी। नारी की जाग्रत चेतना ही इक्कीसवीं सदी में सतयुगी संभावनाओं का आधार बनेगी।

p-ISSN: 2348-6848
e-ISSN: 2348-795X
Vol. 04 Issue 12
Septemebr 2017

नारी के आत्म–बोध, आत्मनिर्भरता एवं आत्मविश्वास के परिप्रेक्ष्य में हिन्दी के आधुनिक उपन्यासों में जो नारी चरित्र उभरकर आए हैं उन्हें तीन वर्गों में दृ उच्च, मध्य और निम्न दृ विभाजित कर देखा जा सकता है। नारी इनमें से किसी भी वर्ग चरित्र में हो, वह अपनी पहचान बनाती है। पहले वर्ग में यदि वह डॉक्टर, प्राध्यापक, अधिकारी, नेता है तो वह विद्रोह और रुढयों को चुनौती देती हुई महत्त्वाकांक्षिणी के रूप में चित्रित है। मध्यवर्गीय चरित्र के रूप में नारी दोहरे मानदंडों से जूझते हुए झूठी इज्जत के कारण अनेक कष्ट भोगने के लिए बाध्य है, यद्यपि वह शिक्षित है, परंतु समाज की झूठी रूढयों में फँसकर अपनी बौद्विकता से दूर रहकर समाज के अनुरूप खुद को ढालने के लिए विवश है। लेकिन तीसरे वर्ग का नारी चरित्र आज सर्वाधिक सशक्त है, वह विद्रोह और रूढयो को खुलकर चुनौती दे रहा है तथा समाज के बंधनों और मर्यादा की परवाह न करके अपनी आत्मा और स्वाभिमान की रक्षा करता है।

यहीं पर उच्च मध्यवर्गीय चरित्र भी उभरता है। शिक्षित नारी चरित्र समाज और स्वयं के व्यवहार के बीच कहीं खाई पाटता है तो कहीं अहम् की तीव्रता के कारण अपने पारिवारिक संदर्भों और मूल्यों को विघटित करता है। यद्यपि यह चरित्र आर्थिक स्तर पर सुदृढ स्थिति में है और रोजी–रोटी की समस्याएं इन्हें नहीं घेरती हैं। इस वर्ग के पात्रों में प्रमुख नारी चरित्र मालतीदेवी (काली आँधी), महरूख (ठीकरे की मॅगनी), शाल्मली (शाल्मली), शीला भट्टारिका (शीला भट्टारिका) आदि है। इस रूढवादी और विद्रोही नारी चरित्र की परिकल्पना नासिरा शर्मा ने शाल्मली के रूप में की है। वह विवाह के निर्णय से लेकर अंत तक समाज की मर्यादाओं का निर्वाह करती है। पढने की शौकीन शाल्मली विवाहोपरांत प्रशासनिक सेवा में चयन के बाद भी घर–परिवार की मर्यादाओं को ओढे रहती है किंतु प्रत्येक वस्तु के लिए पति के आगे हाथ पसारने के संदर्भ में खुला विरोध करती है। गिरिराज किशोर के उपन्यास तीसरी सत्ता की डॉक्टर शिक्षित होकर रूढयों की शिकार होकर अपने बदि्मजाज एवं पति की क्रूरता के कारण अपने स्वाभिमान गला घोंटकर आत्महंता बन जाती है।२ जबकि ठीकरे की मँगनी की महरुख मुसलिम परिवार की शिक्षिता युवती है। अपने मंगेतर रफत के शोधकार्य हेतु बाहर जाने और किसी अन्य से विवाह कर लेने पर उसमें परिवर्तन आ जाता है और रफत के लौटने पर निकाह के आग्रह को ठुकराकर अपने बाल्यकाल के साथी को शौहर बनाकर सारी रूढयाँ तोडकर दिल्ली चली जाती है।३ काली आँधी की नायिका मालती सामाजिक मर्यादाओं और रूढयों को तोडकर राजनेता के रूप में पद एवं प्रतिष्ठा प्राप्त करती है तथा अपनी उन्नति के मार्ग में न अपने पति को आने देती है और न अपनी पुत्री लिली को।४

आधुनिक हिंदी उपन्यासों में पारंपरिक आदर्शवादी और यथार्थवादी नारी चरित्रों का अभाव नहीं है। ऐसे पात्र पारंपरिक आदर्शवादिता और यथार्थ को एक साथ जीते हैं। पाश्चात्य सभ्यता एवं

p-ISSN: 2348-6848
e-ISSN: 2348-795X
Vol. 04 Issue 12
Septemebr 2017

संस्कृति तथा वैज्ञानिकता और शिक्षा प्रसार के कारण सामाजिक बंधनों की शिथिलता और स्वतंत्र चिंतन ने मानव व्यक्तित्व में परिवर्तन भी दर्शाया है तथा आदमी का अहम् भी व्यापक हुआ है। परिणामतः नारी की अहंता बढती दिखाई देती है इसलिए इन नारी चरित्रों में नौकरी की ललक, वैवाहिक संबंधों की शिथिलता, पारिवारिक विघटन का उल्लेख समाहित हो गया है। शाल्मली प्रशासनिक सेवा में चयन होने पर अपना वैवाहिक जीवन विघटित पाती है क्योंकि उसकी महत्त्वाकांक्षाएं उसे आगे जाने के लिए प्रेरित करती हैं। उसके अंदर का आदर्शवाद ही पारिवारिक विघटन से उसे बचा पाता है।५ तीसरी सत्ता की लेडी डॉक्टर के चरित्र की उपलब्धि पारिवारिक जीवन में घुटन और विवशता के अतिरिक्त कुछ भी नहीं है।६ परम्पराएं न तो रूढयाँ हैं और न संस्कारों का भार होती हैं और न उन्हें ओढा जाता है। यही कारण है कि परंपरागत मुस्लिम परिवार की महरुख लीक से हटकर आधुनिक बनते बनते अपनी पहचान बना लेती है।७

समाज में आदर्श एवं यथार्थ दोनों की अपनी विशेषताएं हैं और उनके बीच ही विसंगतियों का विकास होता है। सामाजिक आदर्श की अपेक्षा यथार्थ की ओर व्यक्ति का झुकाव होता है और वह परंपरागत रूढयों एवं मान्यताओं को तोडने को कटिबद्ध होता है। आधुनिक उपन्यासों के नारी चरित्रों में एक संघर्षात्मक स्थिति का चित्रण उपन्यासकारों ने किया है। महरुख का रफत के साथ विवाह से पहले जाना मुस्लिम परंपरा के विरुद्ध है किंतु बदली हुई परिस्थितियों में शिक्षा देते जाने में परंपरा की परवाह नहीं की है। इसी प्रकार काली आँधी की मालती का घर की दीवारों से बाहर आना, नेता बनना आदि तत्कालीन यथार्थवादी परिस्थितियों की देन है। तभी यह चरित्र सफल नेता के रूप में समाज की उपलब्धि है। शाल्मली का चरित्र भी यथार्थ रूप में उभरता है। वह अपने पति को इज्जत देती है किंतु कर्त्तव्य के बीच में आने पर यथार्थ का बोध कराते हुए कह देती है– सभी औरतें यदि इस प्रकार अर्जी देने लगें तो हो चुका काम। वह पति की नहीं, सरकार की नौकरी है३.. ।८

आधुनिक उपन्यासों में कुछ चरित्र घरेलू, कामकाजी, अंतर्मुखी और वस्तुगत (सब्जेक्टिव) हैं। उच्चमध्यवर्गीय नारी चरित्रों के रूप में उन्हें देखा जा सकता है ये नारी चरित्र शिक्षित, योग्य एवं विकास की संभावनाएं लिए हैं तथा घर और बाहर दोनों को संभाल रखे हैं। पद पाकर भी अपने परिवार के प्रति उनमें सजगता है तो अपने केरियर के प्रति भी और कर्त्तव्य के प्रति भी। तीसरी सत्ता की लेडी डाक्टर कामकाजी होकर भी घरेलू है और अंतर्मुखी है। शाल्मली अपने सरकारी पद और पति एवं परिवार का ध्यान रखती है। वह अपने घर एवं बाहर में सामंजस्य बनाए रखती है तथा अंतर्मुखी है। काली आँधी की मालती का व्यक्तित्व राजनीति में बिखरता दिखाई देता है। वह घर और बाहर में सामंजस्य न रखकर बाहर की ओर वस्तुगत जीवन को स्वीकार कर लेती है। अतः उसके दाम्पत्य संबंधों में भी टकराव होता है। मिथिलेशकुमारी मिश्र

p-ISSN: 2348-6848
e-ISSN: 2348-795X
Vol. 04 Issue 12
Septemebr 2017

के उपन्यास शीलाभट्टारिका की शीला का सोच अधिक परिपक्व है तथा नारी चेतना का प्रसार रहते हुए भी वह कामकाजी एवं घरेलू नारी चरित्र है।६

मध्यवर्ग के नारी चरित्र मूलतः शिक्षित, पारंपरिक और विद्रोही तो हैं ही, पर इनमें अशिक्षित नारी चरित्र भी हैं। यद्यपि मध्यवर्ग में वर्ग चेतना का रूप सबसे कम लक्षित होता है। इस वर्ग में व्यावसायिक मित्रता, आर्थिक स्थिति और भूमिका में भिन्नता भी द्रष्टव्य है। पर यह वर्ग–चेतना अंतर्मुखी है। आधुनिक उपन्यास के अध्ययन से यह देखा जा सकता है कि इन नारी चरित्रों के पास सीमित साधन होते हुए भी अधिक से अधिक अच्छे ढंग से जीना चाहते हैं तथा वे महत्त्वाकांक्षी भी हैं। कर्क रेखा (शशि प्रभा शास्त्री) की तनु शिक्षित है और भारतीय संस्कारों के पारंपरिक स्वरूप को समझने का प्रयास करती है। शेषयात्रा (उषा प्रियंवदा) की अनुष्का प्रणय के साथ प्रेम–बंधन में बँधती है। वह शिक्षित है और नारी चेतना का विकास उसमें परिलक्षित होता है। शेफाली (शेफाली) शिक्षित एवं भारतीय संस्कृति एवं परंपराओं के अस्वीकार के साथ अपने व्यक्तित्व को प्रमुखता देती है। इसमें उस नारी चरित्र का विद्रोही रूप उभरकर आता है।

?उम्र एक गलियारे की? (शशि प्रभा शास्त्री) की नायिका सुनंदा शिक्षित परंपरागत एवं विद्रोहिणी नारी है। वह भारतीय परंपराओं का निर्वाह करती है, वहीं आत्मबोध से परिपूर्ण है। शेषयात्रा (उषाप्रियवंदा) की अनुष्का, अंधेरा उजाला (विष्णु पंकज) की तारिका–दोनों ही शिक्षित, पारंपरिक एवं विद्रोहिणी हैं। उनके विद्रोह में परिस्थितियों और परिवेश ही कारण बनते हैं। विवाह भी परंपरा और विद्रोह के स्तर पर उभरता है। नारी चेतना के परिप्रेक्ष्य में इन चरित्रों में नारी चेतना के विकास के समानांतर भारतीय संस्कार एवं परंपराएं भी चरित्र निर्मात्री शक्ति बनती है।

मध्यवर्गीय नारी चरित्रों में घरेलू, कामकाजी, वैयक्तिकता, सामाजिकता आदि का अंतःसंघर्ष उभरता है। मध्यवर्गीय ये नारी चरित्र प्रायः काम–काजी हैं, जो उनके जीवन के लिए मजबूरी है। अतः घर और बाहर दोनों ही क्षेत्रों में काम संभालते–संभालते थक जाती हैं। बेघर (ममता कालिया) की नायिका मानसिक परेशानियों से बचने के लिए घर से निकलकर भागा–दौडी के कारण जीवन का सर्वस्व समाप्त कर लेती है। पतझड की आवाजें (निरूपमा सेवती) की नायिका शिक्षित होने के साथ अपनी विशिष्ट भावनाओं और महत्त्वाकांक्षाओं के सूप में बॉयफ्रैण्ड की रेस्पेक्ट भी मेंटेन नहीं कर पाती।१० क्योंकि उसकी मध्यवर्गीय नैतिक चेतना चरमराने लगती है।

वैयक्तिकता और सामाजिकता के अंतःसंघर्ष के कारण इच्छाओं और परिस्थितियों का प्रभाव व्यक्तित्व, नैतिकता, वैचारिकता पर पडता है। त्रिकोण (नरेशकुमार शर्मा) की लोरेन, बेघर (ममता कालिया) की नायिका अग्निगर्भा (अमृतलाल नागर) की सीता, एक चिथडा सुख और ?मुट्ठीभर रोशनी (दीप्ति कुलश्रेष्ठ) की नायिकाएं वैयक्तिकता ओर सामाजिकता से संघर्ष ही नहीं करती,

International Journal of Research
Available at https://edupediapublications.org/journals
p-ISSN: 2348-6848
e-ISSN: 2348-795X
Vol. 04 Issue 12
Septemebr 2017

वरन् अपने अस्तित्व का संघर्ष भी झेलती है। कोरजा (मेहरूनिस्सा परवेज), अंधेरा—उजाला, सत्तरपार के शिखर (पानू खोलिया) प्रतिध्वनियाँ (दीप्ति खंडेलवाल) आदि के नारी चरित्र सामाजिक नैतिकता से मुक्त व्यक्तिगत नैतिकता पर केंद्रित होती दिखाई देती हैं।

नारी सम्मान और पारस्परिक संबंधों के जटिल अंतर्विरोध, प्रेम के अंतरंग स्वरूप तथा नारी—महत्त्वाकाक्षाओं ने नारी चरित्र में दोहरे व्यक्तित्व का निरूपण करने के लिए उपन्यासकार को बाध्य किया है। मध्यवर्गीय नारी चरित्र एक प्रकार से अंतर्मुखी चेतना का विकास द्रष्टव्य होता है। अतिशिक्षित एवं बौद्धिक होती नारी अपने सम्मान के प्रति अधिक सजग हो उठी है। परिणामतः समाज में पारस्परिक संबंधों में अंतर्विरोध की स्थितियाँ बढ गई है। यही नहीं, बढती हुई नारी चरित्रों की अंतर्मुखता समाज विरोधी स्थिति बनती है। समाज एवं सामाजिकता को गौण करते हुए व्यक्ति को अधिक प्रतिष्ठा चित्रित की गई है। अग्निगर्भा (अमृतलाल नागर) की नायिका अपना सम्मान बनाए रखने में पग—पग पर अंतर्विरोध से गुजरती है। वह अपनी पसंद का जीवन साथी चाहती है तथा परंपरागत मूल्यों, मान्यताओं और बंधनों को नकारती है।

वैयक्तिक रुचि, स्वतंत्र चेतना, महत्त्वाकांक्षाओं का आग्रह, शिक्षा का प्रभाव अति अहंवादिता ने आधुनिक उपन्यासों के नारी चरित्रों को अपेक्षाकृत अधिक द्वन्द्वी और विद्रोही बना दिया है। परिणामतः पारस्परिक संबंधों में अंतर्विरोध झलकता है। अर्थ—प्रधानता के कारण पति—पत्नी संबंध पिता—पुत्री संबंध सभी पर इसका प्रभाव परिलक्षित होता है। अंधेरा—उजाला, कर्करेखा, बेघर, चित—कोबरा, प्रतिध्वनियाँ, शेफाली उपन्यासों में नारी चरित्र नारी—पुरुष संबंधों से कहीं कम दाम्पत्य—संबंधों के रूप में देखते हैं। इन चरित्रों में उभरता विचार मूलतः यही है कि— विवाह अपनी जगह है तथा घर के बाहर के प्रेम संबंध अपनी जगह।? इन चरित्र के निष्कर्ष पर यह निष्कर्ष देखा जा सकता है कि इनके मध्य नारी—पुरुष संबंध भावनात्मक आवेग तक सीमित न होकर शारीरिक अपेक्षाओं एवं आवश्यकताओं के रूप में ही सक्रिय हैं।

आधुनिक हिंदी उपन्यासों में नारी चेतना के परिप्रेक्ष्य में अकेलेपन की अब, स्वतंत्र अस्मिता के संघर्ष के प्रति जागरूकता, विवाह, परिवार और समाज के प्रति उनकी भूमिका तथा मानवीय चेतना की प्रतिष्ठा का चित्रण किया गया है। यह अकेलेपन की स्थिति पाश्चात्य संस्कृति की देन ही है, जो परिवेशजन्य परिस्थिति से उत्पन्न होता है क्योंकि भारतीय संस्कृति में वसुधैव कुटुंबकम् का ही चिंतन रहा है। आज पाश्चात्य चिंतन की आयातित मानसिकता ने अकेलेपन का सूत्रपात किया है। आज अतिपरिचयजन्य कुंठाओं की अतिशयता ने पारस्परिक संबंधों को खोखला कर दिया। व्यक्ति से व्यक्ति की दूरी बढा दी गई है। यहाँ हमारे अकेलेपन के मूल में

International Journal of Research
Available at https://edupediapublications.org/journals
p-ISSN: 2348-6848
e-ISSN: 2348-795X
Vol. 04 Issue 12
Septemebr 2017

औद्योगीकरण, यांत्रकता की वृद्धि बढती हुई जनसंख्या, बेकारी, आर्थिक संकट, अराजकता और भोगवादी स्थितियों के कारण भी हैं।

मेरे संधिपत्र (सूर्यबाला), कर्करेखा (शशिप्रभाशास्त्री), अग्निगर्भा (नागर) आदि की नायिकाएं सदैव अजनबी बनी रहती हैं, अकेलेपन से परेशान रहती हैं या फिर अपने को निरर्थक मान लेती हैं। इनके लिए विवाह आपस का एडजस्टमेंट भर है। कर्क रेखा की तनु अकेलेपन में ही गुजार देती है। त्रिकोण की लोरेन पितृसमाज की मुहर बनना दासता बताती है। बेघर की नायिका बिना विवाह के ही शारीरिक संबंध स्थापित करती है। तीसरा पुरुष (प्रफुल्ल प्रभाकर) की नायिका विवाहित होकर भी ?शक? के घेरे में बँध कर रह जाती है तथा उसके लिए भावनाएं गौण हो जाती हैं। अग्निगर्भा की सीता मात्र पारिवारिक एवं आर्थिक भोग का साधन है।

आधुनिक काल में नारी के प्रति पुरुष के भाव बदल गया है और नारी ने भी अपने स्वातंय की घोषणा करते हुए समाज से दया नहीं, अपने अधिकारों की माँग की है।११ वास्तव में आज नारी बढते अजनबीपन, विवाह संबंधों में शिथिलता और परिवार एवं समाज में नारी की स्थिति एवं चेतना का किंचित विकास दिखाई देता हैं मध्यवर्गीय नारी के पास न तो अपना व्यक्तित्व है और न उसे आगे बढाने वाला समाज ही। फिर आर्थिक विषमताएं नारी में क्रोध, खीज, निराशा उत्पन्न करती हैं।

सामाजिक यथार्थ, परंपराओं का नवीनीकरण और आधुनिक–बोध निम्नवर्ग की श्रमशक्ति और उसके शोषण को ही निरुपित करते हैं। महानगरीय सभ्यता के बीच गाँव और कस्बों से आए हुए निम्नवर्ग की जिंदगी पिस जाती है। तभी अनारो (मंजुल भगत) की नायिका आधुनिकता और परंपराओं के बीच जूझती है और अपने वर्ग की समस्त विद्रूपताओं एवं संघर्षों के साथ जीवन को रेखांकित करती है। सेवित्तरी (शैलेश मटियानी) की नायिका सुंदर एवं सुशील है और यथार्थ जीवन जीती है। माटी (बचिंत कौर) की भागवंती जमाने भर की ठोकरें खाती है, पर वह किसी के सामने हाथ नहीं फैलाती है। बसंती (भीष्म साहनी) की नायिका यथार्थ जीवन जीना चाहती है, किसी प्रकार का दबाव वाला नहीं। बुलाकी से विवाह तय किए जाने पर वह दीनू के साथ भाग जाती है, जिसे अपना सर्वस्व मानती है। वास्तव में जीने की अदम्य लालसा उसमें कार्य की प्रखर शक्ति पैदा करती है। निम्न वर्ग के नारी चरित्रों में जीवन मूल्यों एवं नैतिक मर्यादाओं की चिंता नहीं होती है। नैतिक मूल्यों का विघटन, परंपराओं के प्रति विद्रोह, जिजीविषा और अस्तित्व का संघर्ष आधुनिक उपन्यास के नारी चरित्रों में उकेरा गया है क्योंकि नैतिक मान्यताएं उसकी समझ से बाहर हैं। पति द्वारा प्रताडना, पहली पत्नी के होते हुए दूसरी स्त्री ले आना या

p-ISSN: 2348-6848
e-ISSN: 2348-795X
Vol. 04 Issue 12
Septemebr 2017

कुछ रुपयों के लिए अपनी पत्नी को किसी को बेच देना या सोने के लिए बाध्य करना नारी चरित्रों के लिए विशेष परिस्थितियाँ पैदा करती हैं।

बसंती (बसंती) का घर से भागना नैतिक मूल्यों का विघटन है। माटी की भागवंती पति द्वारा प्रताडत है। पति गलत उपयोग कराता है भागवंती का। ढोलन कुंजकली (यादवेंद्र शर्मा चंद्र) की ढोलन का पति अपनी पत्नी के ?जोबन? से कमाकर खाता है और पत्नी का नाच–नंगापन बरदास्त करता है।१२ जनानी ड्योढी (चंद्र) की नायिका को ठाकुर एक बार भोगकर हमेशा के लिए भूल जाते है, पर औरत जनानी ड्योढी में बंद हो जाती है और पुरुष सामीप्य पाने के लिए बाहर से पैसा खर्च कर पुरुषों को बुलाती है।१३ टपरेवाले (कृष्णा अग्निहोत्री) निम्नवर्ग की नारी सुविधा भोगी पुरुष की वासनापूर्ति कर अपने पेट की भूख मिटाती है।१४ डेरेवाले (शैलेश मटियानी) की नारी भी नैतिक मूल्यों का विघटन दर्शाती है क्योंकि देह ही महत्त्व रखती है। डेरेवालों में बेटी सोने का अंडा होती है।१५ नाच्यो बहुत गोपाल (नागर) में निम्नवर्ग (भंगी) के साथ कुलीन लडकी के भागने के पीछे भी परंपराओं के प्रति विद्रोह और अस्तित्व का संघर्ष लिए है।

न समझे मुझे अब कोई निर्बला
शक्ति रूपा हूँ, नारी हूँ मैं वत्सला।

कोमलाँगी हूँ, अबला न समझे कोई
न धीरज की सीमा से उलझे कोई,
मन की कह दूँ तो पत्थर पिघल जाएंगे
चुप रहूँ तो विवशता न समझे कोई ।

न मैं सीता जिसे कोई राम त्याग दे
न मैं द्रौपदी जिसे दाँव में हार दे ,
न मैं राधा जिसे न ब्याहे कृष्ण
मैं हूँ मीरा जो प्रेम का दान दे ।

अपने कंपन से पर्वत कँपा दूंगी मैं
शीत झरनों में अग्नि जला दूंगी मैं,
आज सूरज को दीपक दिखा सकती हूँ
चांद निकले तो घूंघटा उठा दूंगी मैं ।

International Journal of Research
Available at https://edupediapublications.org/journals
p-ISSN: 2348-6848
e-ISSN: 2348-795X
Vol. 04 Issue 12
Septemebr 2017

मैं धरा हूँ, मैं जननी, मैं हूँ उर्वरा
मेरे आँचल में ममता का सागर भरा,
मेरी गोदी में सब सुख की नदियाँ भरीं
मेरे नयनों से स्नेह का सावन झरा।

दया मैं , क्षमा मैं , हूं ब्रह्मा सुता
मैं हूँ नारी जिसे पूजते देवता ।

शक्ति उपासना का भारतीय चिंतन में बहुत बड़ा महत्व है। शक्ति ही संसार का संचालन कर रही है। शक्ति के बिना शिव भी शव की तरह चेतना शून्य माना गया है। स्त्री और पुरुष शक्ति और शिव के स्वरूप ही माने गए हैं।

आधुनिक युग द्वंद्वात्मक भौतिकवाद का युग है। वैश्वीकरण तथा उदारीकरण के तीव्र वेगाघात से जीवन–मूल्य तेजी से बदल रहे हैं। इन परिवर्तमान मूल्यों ने मानव–जीवन के प्रत्येक क्षेत्र को प्रभावित किया है। 'सर्वे गुणाः कांचनमाश्रयन्ति' की उक्ति आज की भोगवादी संस्कृति के सन्दर्भ में सर्वाधिक सार्थक एवं सम्प्रभावी सिद्ध हो रही है, इसी कारण जीवन के आधारभूत पुरुषार्थ चतुष्ट्य में अर्थ एवं काम सर्वाधिक ग्राह्य हो रहे हैं। ऐसी स्थिति में हिन्दी के पुरोधा साहित्यकार 'दिनकर' की प्रसिद्ध कृति 'उर्वशी' की प्रासंगिकता एवं उसका महत्व बढ़ जाता है, क्योंकि वह महज एक अतीन्द्रिय सौन्दर्य तथा उद्दाम प्रेम का ही काव्य नहीं है वरन् काम से आध्यात्म की महायात्रा का प्रेरक आख्यान भी है। इसके इतिवृत्त की मूलधारा में मानव जीवन–दर्शन की कई छोटी–छोटी धाराएं भी आकर मिल जाती हैं। स्वयं 'दिनकर' के शब्दों में–

''इन्द्रियों के मार्ग से अतीन्द्रिय धरातल का स्पर्श, यही प्रेम की आध्यात्मिक महिमा है।''

भोग से योग, काम से आध्यात्म यही तो भारत के सनातन जीवन–दर्शन का शाश्वत स्वरूप है, जिसकी पुष्टि करती है 'पुरुषार्थ–चतुष्टय' की परिकल्पना अर्थात् धर्मरूपी सारथि से नियन्त्रित काम–अर्थ के अश्वों से संचालित जीवनरथ में आगे बढ़ते हुए गन्तव्य 'मोक्ष' तक पहुँचना इस महायात्रा के सहयात्री नर–नारी दोनों हैं– एक दूसरे के सम्पूरक, सम्प्रेरक एवं सहभागी। तभी तो 'रघुवंश' का अमर रचयिता मंगलाचरण में 'वागर्थ' के सम्यक् ज्ञान की याचना 'वागर्थ' की भांति संयुक्त 'शिव–पार्वती' से करता है– अकेले भगवान शिव या पार्वती से नहीं– क्योंकि एक

p-ISSN: 2348-6848
e-ISSN: 2348-795X
Vol. 04 Issue 12
Septemebr 2017

के बिना दूसरे का अस्तित्व नहीं है। नर–नारी का यह स्वरूप सनातन एवं शाश्वत है। यही सम्पूर्ण सृष्टि, उसकी क्रियात्मक शक्ति तथा विकास का आधार है, तभी तो दिनकर पुरुरवा और उर्वशी को दैवी पात्र न मानकर 'सनातन नर' तथा 'सनातन नारी' मानते हैं।

वैश्वीकरण के दौर में तीव्रतर होती भोगवादी संस्कृति का प्रभाव सम्पूर्ण मानव जीवन पर पड़ रहा है। नारी भी इससे अछूती नहीं है। स्वतन्त्रता एवं समानता की भावना ने जहाँ उसे जीवन में पुरुष के साथ कदम– से–कदम मिलाकर आगे बढ़ने की प्रेरणा दी है– शक्ति एवं सामर्थ्य दी है, वहीं भौतिकवादिता के प्रबल आकर्षण ने उसको 'भोग्य नारी' के रूप में पहचाने जाने का संकट भी उपस्थित कर दिया है। एक ओर जीवन मूल्यों के प्रति पारम्परिक आस्था और दूसरी ओर भौतिकता का प्रबल आकर्षण, मन में एक गहरा द्वन्द्व उत्पन्न करता है, जो पुरुखा में बड़ी शिद्दत से दिखाई देता है तथा जिससे प्रकृत्या द्वन्द्व मुक्त उर्वशी भी भ्रमित होती है, तभी तो वह पूछती है ?

''क्या ईश्वर और प्रकृति दो हैं ? क्या ईश्वर प्रकृति का प्रतिफल है ? उसका प्रतियोगी है ? क्या दोनों एक साथ नहीं चल सकते ? क्या प्रकृति ईश्वर का शत्रु बनकर उत्पन्न हुई है ? अथवा क्या ईश्वर ही प्रकृति से रुष्ट है ?''

इनके और ऐसे ही अनेक प्रश्नों के सार्थक उत्तर तलाशने का सुचिन्तित, सुविचारित, सारग्राही सम्यक प्रयास है 'उर्वशी' काव्य का सृजन। दिनकर ने ये उत्तर इस काव्यकृति के विभिन्न पात्रों के माध्यम से प्रस्तुत किए हैं, जिनमें सर्वाधिक प्रभावी एवं आकर्षक हैं नारीपात्र। इनमें लौकिक जीवन का आकर्षण, यथार्थ के आग्रह के साथ ही आदर्श के ओज एवं अध्यात्म के औदात्य का हृदयग्राही रूप देखने को मिलता है। उर्वशी, औशीनरी, सुकन्या, मेनका, चित्रलेखा आदि नारी पात्रों के जीवन में एक ओर यदि अतीन्द्रिय सौन्दर्य की मोहकता, अनिंद्य रूपजन्य अहंकार, उत्कट प्रणयातुरता, काम की उद्दाम उत्तेजना, भोग की उन्मत्त अभिलाषा है, तो दूसरी ओर उनमें आदर्श का आग्रह, औदात्य का आलोक, संवेदना की गहनता, कर्त्तव्यनिष्ठता, मातृत्व की उदात्तता, अध्यात्म की आभा आदि भी है। दिनकर के सृजनशील 'मन ने दर्द को न केवल महसूस किया है अपितु जिया भी है। उनकी सक्षम लेखनी से निःसृत कविता की भूमि पर सृजित इन नारी पात्रों ने भी दर्द को जिया है, बेचौनी को जाना है, वासना की लहरों ने उन्हें

p-ISSN: 2348-6848
e-ISSN: 2348-795X
Vol. 04 Issue 12
Septemebr 2017

डुबाया—उतराया है, रक्त के उत्ताप ने आकुल किया है तथा अन्ततः जीवन मूल्यों से निर्मित संवेदना के गहन—गह्वर की शान्ति में उन्होंने अध्यात्म के आलोक का अनुभव किया है। यही उर्वशी की नारी चेतना का स्वरूप है आधुनिक युग के परिवेश, स्वरूप एवं सरोकारों के सन्दर्भ में यह 'कृति' अत्यन्त महत्त्पूर्ण हो जाती है।

समर्थ साहित्यकार 'दिनकर' की ऐसी सशक्त काव्यकृति की समीक्षा सरल नहीं है। विविध मानसिक भाव—भंगिमाओं वाले विभिन्न नारी पात्रों की समन्वित नारी चेतना की विवेचना, मूल्यांकन एवं आधुनिक समाज के सन्दर्भों के तहत उसकी प्रासंगिकता एवं उपयोगिता का निर्धारण कठिन कर्म था पर लेखिका डॉ. मीता अरोरा ने उसका सफलता के साथ निर्वाह किया है। उन्होंने एक नवीन दृष्टि से इस कृति पर विचार देते हुए बड़े परिश्रम से वैदिक साहित्य से लेकर अधुनातन साहित्य तक समाज में नारी की स्थिति तथा उसकी चेतना के बहुआयामी स्वरूप का मूल्यांकन किया है। मुझे विश्वास है कि 'उर्वशी' काव्य से सम्बन्धित अनेक समीक्षात्मक कृतियों के मध्य यह पुस्तक अपनी उपयोगिता सिद्ध करेगी।

निष्कर्ष

आधुनिक उपन्यासों में चित्रित नारी चरित्रों में वैयक्तिक रुचि, महत्त्वाकांक्षा स्वतंत्र चेतना, अस्तित्व और अस्मिता की पहचान से कहीं अधिक जीवन के दुःखों एवं संघर्षों से परिपूर्ण हैं और उसके समानांतर पीढयों का मोहभंग, टूटन, विघटन, वर्ग संघर्ष की समानांतर चेतना एवं जीवन का अर्थ—बोध उकेरा गया है। यद्यपि यह कहा जा सकता है कि निम्नवर्गीय नारियाँ पुरुषों की अपेक्षा अधिक विद्रोहिणी हैं और समाज की नैतिक मान्यताओं, रुढयों एवं परंपराओं को तोडने में सजग एवं सक्रिय हैं। बसंती, अनारो इसके श्रेष्ठ उदाहरण हैं। खुदा सही सलामत है (रवींद्र कालिया) की गुलाबदई आर्थिक रुप से टूटना नहीं चाहती। यह उसके अपने व्यक्तित्व के प्रति चेतना है, उसमें अपना स्वाभिमान है। उसमें मूक विद्रोह भी निहित है। परवर्ती अध्ययन से यह स्पष्ट हो जाता है कि निम्न वर्ग के नारी पात्र अन्य वर्गों की अपेक्षा अधिक उग्र हैं तथा उनमें अपने अधिकारों के प्रति चेतना की तीव्रता है जिसे नारी विमर्श के निकष पर स्वीकार किया जाता है।

सन्दर्भ सूचि

- यादव, क. (२००८). यशपाल केउपन्यासत्रःसाहित्य में नारी चेतना.?
- तलवार, बी. (२००३). अधुनातनलेखिकाओं के उपन्यासरू नारी चेतना के विविधआयाम सं १६७५ से १६६५ तक.?
- गीता, स. (२००२). कृष्णा सोबती केउपन्यास नारी चेतना के विशेष सन्दर्भ में.?
- काकड़िया हटना, स. (२०१६).समकालीन महिला उपन्यासकारो के उपन्यासो मेंनारी चेतना. ?
- सोनिया गौड़ (**2015**)। उत्तरसीतचरित में नारी चेतना ग्लोबल जर्नल ऑफ इंजीनियरिंग, साइंस एंड सोशल साइंस स्टडीज–आईएसएसएन–**23 9 4] 84] 1** (**2**
- सोलंकी, एच। एम। (**2009**)। शिवानी के उपन्यासों में नारी चेतना (डॉक्टरल शोध प्रबंध, सौराष्ट्र विश्वविद्यालय)